


---

kAmAkShyaShTakam

——  
कामाक्ष्यष्टकम्

——  
Document Information



---

Text title : kAmAkShyaShTakam

File name : kAmAkShyaShTakam.itx

Category : aShTaka, kAmAkShI

Location : doc\_devii

Proofread by : Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net, NA

Latest update : August 2, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



कामाक्ष्यष्टकम्



श्रीकाञ्चीपुरवासिनीं भगवतीं श्रीचक्रमध्ये स्थितां  
कल्याणीं कमनीयचारुमकुटां कौसुम्भवस्त्रान्विताम् ।  
श्रीवाणीशचिपूजिताङ्घ्रियुगलां चारुस्मितां सुप्रभां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ १ ॥

मालामौक्तिककन्धरां शशिमुरवीं शम्भुप्रियां सुन्दरीं  
शर्वाणीं शरचापमण्डितकरां शीतांशुबिम्बाननाम् ।  
वीणागानविनोदकेलिरसिकां विद्युत्प्रभाभासुरां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ २ ॥

श्यामां चारुनितम्बिनीं गुरुभुजां चन्द्रावतंसां शिवां  
शर्वालङ्कितनीलचारुवपुषीं शान्तां प्रवालाधराम् ।  
बालां बालतमालकान्तिरुचिरां बालार्कबिम्बोज्ज्वलां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ३ ॥

लीलाकल्पितजीवकोटिनिवहां चिद्रूपिणीं शङ्करीं  
ब्रह्माणीं भवरोगतापशमनीं भव्यात्मिकां शाश्वतीम् ।  
देवीं माधवसोदरीं शुभकरीं पञ्चाक्षरीं पावनीं  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ४ ॥

वामां वारिजलोचनां हरिहरब्रह्मेन्द्रसम्पूजितां  
कारुण्यामृतवर्षिणीं गुणमयीं कात्यायनीं चिन्मयीम् ।  
देवीं शुम्भनिषूदिनीं भगवतीं कामेश्वरीं देवतां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ५ ॥


कान्तां काञ्चनरत्नभूषितगलां सौभाग्यमुक्तिप्रदां  
कौमारीं त्रिपुरान्तकप्रणयिनीं कादम्बिनीं चण्डिकाम् ।  
देवीं शङ्करहृत्सरोजनिलयां सर्वाघहन्त्रीं शुभां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ६ ॥

शान्तां चञ्चलचारुनेत्रयुगलां शैलेन्द्रकन्यां शिवां  
वाराहीं दन्तुजान्तकीं त्रिनयनीं सर्वात्मिकां माधवीम् ।  
सौम्यां सिन्धुसुतां सरोजवदनां वाग्देवतामम्बिकां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ७ ॥


चन्द्रार्कानललोचनां गुरुकुचां सौन्दर्यचन्द्रोदयां  
विद्यां विन्ध्यनिवासिनीं पुरहरप्राणप्रियां सुन्दरीम् ।  
मुग्धस्मेरसमीक्षणेन सततं सम्मोहयन्तीं शिवां  
कामाक्षीं करुणामयीं भगवतीं वन्दे परां देवताम् ॥ ८ ॥  
इति श्रीकामाक्ष्यष्टकं सम्पूर्णम् ।

Proofread by Jonathan Wiener wiener78 at sbcglobal.net, NA

---

——  
*kAmAkShyaShTakam*

pdf was typeset on December 22, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

